eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

भारतीय संगीत मे ताल की उपादेयता

[1]डा0 दीपाली श्रीवास्तव
[1]सह प्रोफेसर, (संगीत विभाग) महिला महाविद्यालय पी0जी0 कालेज कानपुर, उ0प्र0

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

स्वर और लय संगीत रूपो भवन के दो आधार स्तम्भ है। स्वर से राग और लय से ताल लय नापने के लिय मात्रा की रचना की गई संगीत गायन, वादक और नृत्य की त्रिवेणी हैं। इन तीनो मे ताल का बडा महत्व है। गायक वादक को हमेशा ताल का ध्यान रखना पडता है वाह नई – नई कल्पना करता है किन्तु ताल से बाहर नही जा सकता। जितनी सुन्दरता से वाह अच्छे गायक वादक मे ताल की कुशलता होना आवश्यक से और नृत्य के अंग प्रदर्शन और लय के माध्यम से मात्रो को प्रकट किया जाता है इतना ही नही तबला के बोलो के टुकडो को भी नृत्य द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

उचित ताल के प्रयासो से ही संगीत मे रस ऋृष्टि होती है और तयी आनंद प्राप्त हामता है। अर्थत् कह समते है कि संगीत मे ताल को प्राण कहा गया है और शरीर बिना प्राण के शव के मान होता है इस लिये लय व ताल एक दूसरे मे पूरक है।

शब्द संक्षेप– भारतीय संगीत, तबला, ताल, वादक, उपादेयता।

Introduction

ताल को संगीत का प्राण कहा जाता है। ताल विहीन संगीत को आरण्यक संगीत कहा है। विक्षनो के मतानुसार को स्वयंज्ञान की अपेक्षा जल ज्ञान पूर्ण ही प्राप्त हो चुका था। प्राकृति को समझ कर मानव ने लय धरण का ज्ञान पगाप्त किया था। सर्वप्रथम भूमि पर पैर मारकर तालि हाथ से ताली देकर मानव ने लय धरण का कार्य किया जिस क्रिया को हम सशब्द व निशब्द किया कहते है।

ताल की उत्पत्ति –

"ताल शब्दस्य निष्पतिः प्रतिष्ठाथेन घतुन।
गीतं, वाघं च नृत्यं च भति ताले प्रतिष्ठितम्।।" **1**

संगीतज्ञो के मतनुसार वर्णो का धतु रूप शब्द कहते थें परिमाणसूचक 'मा' धतु से मात्रा शब्द का ण्वं रंजक चनद धतु से छनद का उद्रभव हुआ है। विद्वानो के अनुसार ताल का धतु रूप तल हैं। इसे हम भित्ति कह सकते हैं गीत, वाद्य और नृत्य तीनो की प्रतिष्ठा ताल पर हुई है। सम्भवतः इसलिए प्रतिष्ठावाचक धतुरूप 'तल' से ताल बना हो सकता हैं ।

"तालस्तलप्रतिष्ठाया भित्ति धतोधञस्मृत!"
गीतं वाधं तथा नृत्य यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।। 2

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

जब हम भारतीय संगीत के इतिहास का अध्ययन करते है तो अतिप्राचीन, प्राचीन काल जो ईसा पूर्व 3000 से 2000 वर्ष माना जाता है उस समय के ताल वाद्य के पुष्कर, हुडुक, ढोलक, मृदंग पखवज आदि वाद्यो का प्रयोग होता था। जिसका उल्लेख शिलालेखों मे दिखाई पडता हैं। वैदिक काल मे भी संगीत काफी विकसित हो चुका था। जिसमे तालवाद्यो का वादन होता जो विभिन्न मात्रिक खण्डो के निश्चित मात्रिक पदो के अनुसार गायन, वादन, नृत्य मे किया जाता था। 2–2, 2–3, 3–3, 3–4 मात्रिक खंडो के अनुसार होता था। उसी समय पौराणिक काल, रामायण, महाभारत काल मे भी तालवाद्यो का उल्लेख प्राप्त होता है। इसी काल मे 'तोलकटिपयन' भाषा , व्याकरण, छंद काव्यरूप, ग्रंथ भी उपलब्ध था।

उपरोक्त तत्वो के आधार पर :–

भरतकृतः–नाट्यशास्त्र मे भी काल ही मानते है जो 3 या 4 सदी के लगभग मानते है इसके 31 अध्याय मे ताल की स्पष्ट व्याख्या दी गई है। इसी ग्रंथ मे गीत, वाद्या और नृत्य मे ताल प्रयोग का विस्तृत विवेचन भी किया गया है। जिसमे काल, भाव और लय की दो जातियॉ त्रयस्ट गायन वादन एवं नृत्य मे कितनी अधिक है। उसका भरत के ग्रन्थ मे अत्यन्त स्पष्ट शब्दो मे उल्लेख किया है। जिसे ताल का ज्ञान नही उसे गायक वादक नही कहा जा सकता अर्थात्–

"यस्तु ताल न जानान्ति न स गाता न वादक" 3

कोहल के अनुसार –

ताकरः शंकर ! प्रोतोलकारः शातिस्छयते ।
शिवशक्ति समायोगान्ताल नामानिधियतो।। 4

शांरगदेव के अनुसार–

स्थिरता को दर्शानेवाले तल धातु के आध स्वर की अप्रत्यक्ष के कारण वृद्धि होकर ताल शब्द बना है। लघु, गुरू आदि प्रमाण के क्रियाओ से नापा जाने वाला गीत वाद्या तथा नृत्य को स्थिरता प्रदान करने वाला तथा परिभरण धारण करने वाला काल हो ताल है। आपने अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर के पंचवे अध्याय मे जालाष्याय मे भी 120 देशी तालो का व्याख्यान किया है।

संगीतावर्णन मेः–

तांडव नृत्य से व तथा लास्य नृत्य से ल इस प्रकार दोनो वर्णे के संयोग से ताल शब्द की उत्पत्ति बताई है। ता नाम शंकर जी और ल नाम पार्वती जी का है इन दोनो के योग से ही ताल की उप्पति हुई।

संगीतरत्नाकार मे से यें श्लोक कहा गया है।

तालस्तलं प्रतिष्ठायामिति धातोधेति स्मृतः
गीत वाद्य तथा नृत्य यतस्ताले प्रतिष्टिम् ।। 5 (पृष्ठ 57)

संगीतमंक करद :–

तालश्हरस्य निष्पतिः प्रतिष्ठा ।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

धेगघतुना गीत वाद्यच नृत्य च भाति ताल प्रतिष्टितम्।। 6 (पृष्ठ 46)

पं0 दमोदर मिश्र ने संगीत दर्पण मे ताल की उत्पति के विषय मे लिखा हैं

त्कारः शडऋकरः प्रोक्तो लकारः पार्वती स्मृता ।
शिवशक्ति समायोगत ताल इत्याभिधियतेः ।। 7 (पृष्ठ 56)

इन परिभाषा के आधर परद संगीत मे ताला का स्थान समय मापक यंत्र गायन, वादक एवं नृत्य को आधार प्रदान करने वाला अखण्ड काल विभाजन है।

भारतीय संगीत मे प्राचीन काल से वर्तमान काल लय ताल के दस प्राणो का उल्लेख किया जाता है। जिनका ताल मे प्रस्तुति से सीधर सम्बन्ध होता है। काल मार्ग किया अग्रं ग्रंह जाति कला लय यति प्रस्तार इन नियमो के अन्तर्गत ताल का वादन करने से संगीत मे रसोतपति4, भावोतपति, समयबन्धन, सौन्दर्य, स्थायित्व, संरक्षण आदि के लिए योग्य सिद्ध होते है तथा वर्तमान मे थी उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय जाल लिपि पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है।

पद्धति के नियमो के अनुसार चलने से भारतीय संगीत के तालो मे सुन्दरता मधुरता आ जाती है। स्रीत का ताल रूप मे समय एवं लय बद्ध होना उसे मधुरतम, स्फूर्तिदायक एवं लय बद्ध होना उसे मधुरतम, स्फूर्तिदायक एवं मनोरंजन बना देता है साथ ही ताल क्षरा संगीत सौन्दर्यपूर्ण एवं चमत्कारपूर्ण चलन शैलियो का विकास करता है। पर पहुंचा देता है तथा ही प्रतिमा सम्पन्न कलाकारो की चलन शैलियो का सृजन एवं विकास ताल द्वारा ही सम्पन्न होता है। ताल द्वारा विभिन्न लयकारी चलन शैली के मौलिक ततव से समन्वित होकर संगीतकारो की कला दुगुनी, चौगुनी प्रयावोम्पादक हो सकती है।

यदि कुशल गायक या वादक का ताल के चलन शैली मे ताल मे तय ठीक बैठता है तभी कार्यक्रम मे चार चांद लग जाते है। शास्त्रों कथन है कि संगीत मे ताल की उपादेयता संगीत को शोभामान बना देती है जिस प्रकार देह मे प्रधान मुख और मुख मे प्रधान नासिका उसी प्रकार ताल विहीन संगीत नासिका मुख के समान है। श्री नरहरी चक्रवर्ती के मतानुसार–

मुख प्रधान –देहस्य नासिका मुख – महयके ।
तलहीन तथा गीतं नासाहीन मुखं यथा।। 8 (पृष्ठ 49)

जिस प्रकार बिना पतवार के नाव बेकार होती है वैसे ही तालविहीन संगीत अशुद्ध संगीत है। इसलिए ताल अनादि है वस्तुतः ईश्वर द्वारा सृजित सृष्टि मे समय कम की जो निश्चित गति है वही संगीत मे तालरूपम` व्यवहत है।

उपरोक्त तथ्यो के आधार पर भारतीय संगीत, लोकसंगीत, सिनेमा संगीत हो उसमे मात्रिक खंडो के अनुसार विशेष लयकारी मे उचित ताल वादन की आवश्यकता होती है जिसमे गाायन ,वादन, नृत्य मे सुन्दरता बनी रहती है। विद्वानो द्वारा यह कहावत सार्थक सिद्ध होती है कि –'' एक बार बेसुरा ग्रध्य होता है बेताला नही''।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

हम देखते है कि अच्छे से अच्छे संगीतकार को यदि ताल वाद्य की वादक की उचित संगत प्राप्त नही होती है तो उसका कार्यक्रम असफल हो जाता है, अन्यथा नही। गायक, वादक तथा नर्तक के कलात्मक मूल्य की अनुभूति ताल गति मे यि गये समय समियिक एवं सम – प्राकृतिक बोलो के निकास से संभव होती है। एक साधारण कलाकार भी उत्तम ताल संगति के कारण अपने को अधिक श्रेष्ठ प्रमाणित करने मे समर्थ होता है।

इस प्रकार हम देखते है कि भारतीय संगीत मे ताल का क्रमिक विकास उसके महत्व एवं आवश्यकता के अनुसार प्राचीन काल से ही प्राप्त होता है। संगीत चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो, लोक संगीत हो या सिनेमा संगीत हो उसमे यांत्रिक खंड के अनुसार विशेष लयकारी मे उचित ताल बादन आवश्यक होता है। जिसमे गीत की शैली की सुन्दरता बनी रहे, वह निरेतर अच्छा लगे, उसमे रस निष्पत्ति हो एवं मनोरंजन बन सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1.भारतीय तालो का शास्त्रीय विवेचन पृष्ठ 45

2.भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ 84

3.ताल बाद्य शास्त्र पृष्ठ 84

4. ताल बाद्य शास्त्र पृष्ठ 30

5.ताल परिचय भाग 3 पृष्ठ 57

6. भारतीय तालो का शास्त्रीय विवेचन पृष्ठ 46

7. ताल परिचय भाग 2 पृष्ठ 56

8. तबला पुराण पृष्ठ 49